58

''हैलेलुय्याह!'' का गीत

(19:1-6)

संसार के सबसे प्रसिद्ध गीतों में से एक हेंडेल के *मसायाह* में से ''हैलेलुय्याह कोरस'' है।[1] गीत के बोल बहुत ही सादे हैं, विशेषकर ''हैलेलुय्याह'' शब्द को दोहराते हुए जिनमें कुछ वाक्यांश ''क्योंकि सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर राज करता है''; ''वह सदा सर्वदा, और सदा तक राज करेगा''; ''राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु'' हैं! तौ भी अच्छी तरह गाया जाने पर यह गीत किसी भी सुनने वाले की हड्डियों में कंपकंपी लगा सकता है। हेंडेल ने कहा कि यह गीत लिखते समय उसे ऐसे लगा जैसे यह स्वर्ग में ले जाया गया है। और परमेश्वर की उपस्थिति में हैं।[2]

बहुत से लोगों को यह गीत आता है, परन्तु बहुतों को यह पता नहीं है कि हेंडेल के इस शानदार गीत की प्रेरणा लगभग प्रकाशितवाक्य 19 से ही मिली थी, ''इसके बाद मैंने स्वर्ग में मानो बड़ी भीड़ को ऊंचे शब्द से यह कहते सुना, कि हैलेलुय्याह उद्धार और महिमा, और सामर्थ हमारे परमेश्वर ही की है'' (आयत 1)। पहली 6 आयतों में बार-बार आनन्द की पुकार उठती है: ''हैलेलुय्याह!'' (आयतें 1, 3, 4, 6)। आयत 6 में स्वर्गीय और पृथ्वी का संयुक्त गीत गाया जाता है, ''हैलेलुय्याह! क्योंकि प्रभु हमारा परमेश्वर, सर्वशक्तिमान, राज करता है।'' अन्त में आयत 16 में हम पढ़ते हैं, ''उसके ... यह नाम लिखा है, 'राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु।''[3]

हेंडेल के गीत और प्रकाशितवाक्य 19:1-6 का मुख्य शब्द ''हैलेलुय्याह'' है। ''हैलेलुय्याह'' एक इब्रानी शब्द है, जो पहले यूनानी में लिप्यंतरित हुआ और फिर अंग्रेज़ी तथा अन्य भाषाओं में।[4] यह परमेश्वर के पवित्र नाम (*Jah*, ''यहोवा'' का संक्षिप्त रूप) के साथ ''स्तुति'' (*halah*) के लिए इब्रानी शब्द को मिलाता मिश्रित शब्द है। इसका अक्षरश: अर्थ ''यहोवा की स्तुति हो'' या जैसा कि इसे आमतौर पर अनुवाद किया जाता है, ''प्रभु की स्तुति हो'' है।[5]

कइयों को यह जानकर आश्चर्य होगा कि ''हैलेलुय्याह'' शब्द अधिकतर बाइबलों में प्रकाशितवाक्य 19:1-6 में ही मिलता है। हमारी धार्मिक शब्दावली में यह शब्द इतना घुल-मिल गया है कि हम यह मान लेते हैं कि यह पूरी बाइबल में ही है, परन्तु ऐसा नहीं है। भजन संहिता की पुस्तक में इस इब्रानी शब्द का इस्तेमाल चौबीस बार हुआ है, परन्तु उसका अनुवाद ''प्रभु की स्तुति हो'' या इसके समान भी हुआ है![6] मान्य अंग्रेज़ी बाइबलों में ''हैलेलुय्याह'' केवल चार बार मिलता है, और वह भी प्रकाशितावाक्य 19:1-6 में।

यहां हमें स्वर्गीय ''हैलेलुय्याह!'' कोरस मिलता है।

अपने अध्ययनों में हमने स्तुति के कई पद देखें हैं; परन्तु अध्याय 19 में परमेश्वर की स्तुति अपने चरम पर पहुंच जाती है। मैंने पहले कहा था कि आराधना का सार स्तुति है और इस बारे में मैं अपने आप में कमी महसूस करता हूं। इसीलिए मैंने इस साल के आरम्भ में परमेश्वर की स्तुति करने पर बाइबल में से वचनों का अध्ययन किया। मैंने निष्कर्ष निकाला कि हमें मुख्यतया दो बातों में उसकी स्तुति करनी आवश्यक है: जो कुछ उसने किया है और जो वह है। दोनों विषयों को समेटता एक वचन है जो भजन संहिता 150:2 में मिलता है: ''उसके पराक्रम के कामों के कारण [जो कुछ उसने किया है] उसकी स्तुति करो; उसकी अत्यंत बड़ाई [जो वह है] के अनुसार उसकी स्तुति करो।'' प्रकाशितवाक्य का ''हैलेलुय्याह!'' कोरस इन दो विषयों पर केन्द्रित भी है।

उसके लिए परमेश्वर की स्तुति जो उसने किया है (19:1-4)

अध्याय 19 की पहली आयतें अध्याय 18 की आज्ञा का प्रत्युत्तर हैं: ''हे स्वर्ग, और हे पवित्र लोगो और प्रेरितो, और भविष्यवक्ताओ, उस [अर्थात बाबुल] पर आनन्द करो, क्योंकि परमेश्वर ने न्याय करके उससे तुम्हारा पलटा लिया है'' (18:20)। अध्याय 18 की सिसकी और खामोशी के बाद अध्याय 19 वाले गीत का उभार आता है।

अध्याय आरम्भ होता है, ''इसके बाद मैंने ... सुना'' (आयत 1)। ''इसके बाद'' रोम के पतन को दर्शाते दृश्यों को कहा गया है। अध्याय 19 की पहली छह आयतें 17:1 में बाबुल के पतन पर लम्बे वचन का सार हैं। 19:1ख में हम पढ़ते हैं, ''मैंने स्वर्ग में मानो बड़ी भीड़ को ऊंचे शब्द से यह कहते सुना।'' 5:11 में हम स्वर्गदूतों की बड़ी भीड़ और 7:9 में उद्धार पाए हुओं की बड़ी भीड़ के बारे में पढ़ते हैं। शायद इन दोनों समूहों की आवाज़ें मिल गई थीं।[7]

स्वर्गीय गायन मण्डली ने गाया, ''हैलेलुय्याह! उद्धार[8] और महिमा और सामर्थ हमारे परमेश्वर की ही है'' (आयत 1ग)।[9] रोम को यह लगता था कि महिमा और शान केवल उसी की है; उसने इस बात पर ज़ोर दिया कि कैसर संसार का उद्धार करता है, परन्तु वह गलत था। उद्धार, महिमा और सामर्थ विशेष रूप से यहोवा के हैं। विलियम बार्कले ने लिखा है:

> परमेश्वर के इन तीनों बड़े गुणों में से हर एक से मनुष्य के मन में इसका अपना प्रत्युत्तर जागना चाहिए। परमेश्वर के *उद्धार* से मनुष्य की *कृतज्ञता* जागनी आवश्यक है; परमेश्वर की *महिमा* से मनुष्य की *भक्ति* जागनी आवश्यक है; परमेश्वर की *सामर्थ* से ... मनुष्य का *भरोसा* जागना ... आवश्यक है। कृतज्ञता, भक्ति और भरोसा तीनों सच्ची महिमा की बातें हैं।[10]

परमेश्वर के गीत गाने वालों ने ऐसे ऊंचे शब्दों में क्यों कहा? ''क्योंकि उसके निर्णय सच्चे और ठीक हैं'' (आयत 2क)।[11] हमारे निर्णयों में कमियां होती हैं, परन्तु परमेश्वर के

निर्णय हमेशा सही और सच्चे होते हैं।

> तीनों कारणों से न्याय करने में केवल परमेश्वर ही सिद्ध है। पहली बात तो यह कि किसी भी मनुष्य के मन के विचारों और इच्छाओं को केवल वही देख सकता है। दूसरा केवल उसी में वह शुद्धता है, जो बिना पूर्व धारणा के न्याय कर सकती है। तीसरा केवल उसी में सही निर्णय का पता लगाने की बुद्धि और उसे लागू करने की शक्ति है।[12]

इसके बाद गीत सामान्य से विशेष अर्थात सही और सच्चे निर्णय की ओर हो गया:

> ''इसलिए कि उसने उस बड़ी वेश्या [अर्थात रोम नगर[13]] का जो अपने व्यभिचार से पृथ्वी को भ्रष्ट करती थी, न्याय किया, और उससे अपने दासों के लोहू का पलटा लिया है। फिर दूसरी बार उन्होंने हैलेलुय्याह कहा: और उसके जलने का धुआं युगानुयुग उठता रहेगा''[14] (आयतें 2ख, 3)।

रोम वह ''केन्द्र'' था, ''जहां से प्राचीन समाज के हर क्षेत्र में बुराई जाती थी'' यानी वह ''केन्द्र था, जहां मनुष्य के भ्रष्ट मन में उपजी हर बुराई [बहती] थी।''[15] ''उसके पापों का ढेर स्वर्ग तक पहुंच गया'' था (18:5)। जिस कारण अन्त में उसे परमेश्वर द्वारा ''स्मरण'' किया गया था (16:19; 18:5)।

हेंडल के *मसायाह* से परिचित लोगों को उसके ''हैलेलुय्याह कोरस'' और प्रकाशितवाक्य 19:1-6 के गीत में अन्तर दिखाई देगा। हेंडल का आनन्दपूर्वक काम यीशु के द्वारा परमेश्वर की योजना के पूरे होने पर है, यानी इसमें यीशु की मृत्यु, पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण पर केन्द्रित रह कर उसकी मृत्यु पर जय का जश्न मनाया गया है। दूसरी ओर प्रकाशितवाक्य 19 का पहला भाग परमेश्वर के कठोर, निरन्तर क्रोध की सराहना करता प्रतीत होता है। एक ''हैलेलुय्याह कोरस'' जीवन और स्वतन्त्रता पर केन्द्रित है, जबकि दूसरा मृत्यु और विनाश को नाटकीय रूप देता प्रतीत होता है।

यह अन्तर मसीही लोगों को अजीब लग सकता है, क्योंकि हम उन पापियों की मृत्यु पर जिनके पास मन फिराने का अवसर नहीं है, के बजाय मन फिराने वाले पापी पर आनन्द करने की बात से अधिक परिचित हैं (लूका 15:7, 10)। बाइबल के आलोचक इस बात पर बहुत कुछ कहते हैं कि प्रकाशितवाक्य बाबुल के विनाश के लिए परमेश्वर की महिमा करती है। हमने न्याय पर प्रकाशितवाक्य में दिए गए ज़ोर के आस-पास विवाद पर चर्चा की है,[16] परन्तु यहां अतिरिक्त टिप्पणियां देना सही होगा।

पहले तो हमें प्रकाशितवाक्य 19:1-6 जैसी आयतों से उपजी मौजूदा परिस्थिति को समझने की आवश्यकता है। मसीही लोग कॉफी पीने, सरकार के साथ मसीही व्यक्ति के सम्बन्ध या बदला लेने बनाम परमेश्वर का बदला जैसे विषयों पर चर्चा करने के लिए शान्त होकर खाने की मेज़ के आस-पास नहीं बैठे थे। वे अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहे थे यानी उनके जीवन दाव पर लगे हुए थे।

> वे रंगशाला में शेरों के आगे डाले गए, रात को रोमी आसामान को रोशन करने के लिए जलाए गए, सताने वालों द्वारा जानवरों की खालें पहनाकर खतरनाक शिकारी जानवरों को डाले गए अपने परिजनों को खो चुके थे।[17]

उनके प्राण पुन: आश्वासन के लिए पुकार रहे थे और प्रकाशितवाक्य ने उन्हें यही दिया।

पागल, घायल पशु द्वारा घने जंगल में पीछा करने की कल्पना करें। आप अन्धेरे में से भाग रहे हैं, आपका दिल धड़क रहा है, वृक्षों की टहनियां आपके मुंह पर लग रही हैं। इसी बीच आप खून के प्यासे एक जीव को निकट और निकट आते सुन सकते हैं। आपको गिरी हुई टहनी से ठोकर लग जाती है और आप भूमि पर लड़खड़ा कर गिर जाते हैं। आप अन्धेरे में उस पशु की चमकती आंखें देख सकते हैं। वह झुक कर झपटता है। आप अपनी आंखें बन्द करके उसके खतरनाक दांतों से आपका शरीर फाड़ डालने की प्रतीक्षा करते हैं। अचानक जंगल में गोली की आवाज़ आती है और वह पशु आपके कदमों में मृत होकर गिर जाता है। यदि ऐसा आपके साथ हो तो क्या आप आनन्द नहीं करेंगे? क्या आप उसकी प्रशंसा नहीं करेंगे, जो समय पर आपको बचाने के लिए आ गया?

इसलिए मैं पहले तो यह सुझाव दूंगा कि अध्याय 19 का आनन्द करना स्वाभाविक है। अध्याय 13 का भयंकर पशु भड़कीली वेश्या के उत्तेजित किए जाने पर मसीही लोगों का पीछा कर रहा था, अपने विनाश के प्रति समर्पित होने वालों को जान का आनन्दित होने का अर्थ थे कि मनुष्य से कुछ कम हैं।

परन्तु हमें और गहराई से पता लगाना चाहिए। हमें यह ज़ोर देना चाहिए कि इन वचनों में दूसरों की विपत्तियों पर बच्चों की तरह ललचाई आंखों से देखने को प्रोत्साहित नहीं किया गया। अध्याय 19 का "हैलेलुय्याह!" कोरस "बदला लेने का नहीं, बल्कि बदला मिलने का संकेत देता है।"[18] मुख्य विषय बदला लेना नहीं, बल्कि निर्दोष ठहरना है।[19]

नया नियम यह स्पष्ट कर देता है कि इसमें पड़ना मसीही लोगों का काम नहीं है। हमें अपने शत्रुओं से प्रेम करना और उनके लिए प्रार्थना करनी चाहिए, जो हमें सताते हैं (मत्ती 5:44)। पौलुस ने आज्ञा दी, "अपने सताने वालों को आशीष दो; ..."; "बुराई के बदले किसी से बुराई न करो" (रोमियों 12:14, 17ख)। परन्तु ये महत्वपूर्ण है कि रोमियों 12 जो व्यक्तिगत बदला लेने की बात करता है, ईश्वरीय बदला लेने के बारे में भी बताता है: "हे प्रियो अपना पलटा न लेना; परन्तु क्रोध को अवसर दो, क्योंकि लिखा है, पलटा लेना मेरा काम है, प्रभु कहता है मैं ही बदला दूंगा" (आयत 19)।

"ईश्वरीय बदला लेने का विषय ... पूरी बाइबल में बिना रुकावट के मिलता है।"[20] बार-बार यह ज़ोर दिया गया है कि बदला लेना परमेश्वर का काम है।[21] बहुत पहले परमेश्वर के लोगों से प्रतिज्ञा की गई थी: "... आनन्द मनाओ; क्योंकि वह अपने दासों के लहू का पलटा लेगा और अपने द्रोहियों को बदला देगा और अपनी प्रजा के पाप के लिए प्रायश्चित देगा" (व्यवस्थाविवरण 32:43)। आरम्भिक मसीहियों के लिए यह देखना रोमांचकारी होगा कि परमेश्वर अभी भी अपनी प्रतिज्ञा पूरी कर रहा था। निश्चय ही इससे

उन्हें आनन्द करने का पर्याप्त कारण मिल गया था।

आइए इस विचार को एक कदम आगे बढ़ाते हैं: एक क्षण पहले, मैंने कहा कि प्रकाशितवाक्य 19:1-6 का मुख्य विषय बदला लेना नहीं, बल्कि निर्दोष ठहराना है। यह निर्दोष ठहराना जिसकी मैं बात कर रहा हूं मसीही लोगों को निर्दोष ठहराना है: रोम ने उन्हें अपराधियों के रूप में मार डाला था, परन्तु परमेश्वर ने उन्हें पवित्र लोगों के रूप में जिला दिया। परन्तु इससे भी महत्वपूर्ण *परमेश्वर* का पलटा लेना और उसकी योजनाएं और उद्देश्य था।

प्रकाशितवाक्य 12 में हमने देखा कि असली लड़ाई परमेश्वर और शैतान के बीच है। बुराई बिना दण्ड के रह जाए तो क्या होता? यदि परमेश्वर पाप को दण्ड न देता तो? क्या ऐसा नहीं लगता कि बुराई जीत गई है? प्रकाशितवाक्य 19:1-6 की पृष्ठभूमि "यह प्रश्न है कि मनुष्य के मामलों में परमेश्वर का शासन विजयी है या शैतान की भ्रमित शक्ति।"[22]

कोई आपत्ति कर सकता है, "परन्तु परमेश्वर को पापियों पर करुणा करनी चाहिए उन पर भी जो निरन्तर और बिना रुके उसकी इच्छा को नहीं मानते।" यदि परमेश्वर आज्ञा न मानने वाले जघन्य पापियों को दण्ड न देता, तो यह संदेश नहीं जाना था कि परमेश्वर दयालु है बल्कि इससे यह संदेश मिलना था कि परमेश्वर *उदासीन* है, यानी उसे परवाह नहीं है कि लोग पाप करते हैं। इस मामले के सम्बन्ध में, इससे यह घोषणा होती कि परमेश्वर मूर्तिपूजा के प्रति उदासीन है, तानाशाही के प्रति उदासीन है और यहां तक कि अपने लोगों के कष्ट के प्रति उदासीन है। एल्बर्ट बाल्डिंगर ने कहा है:

> ... व्यक्तियों या पूरे समाजों के दुःख या प्रसन्नता से भी महत्वपूर्ण मामले हैं।
> ... लोग यदि सनातन न्याय के विरुद्ध विद्रोह के आपराधिक मार्ग पर बिना चुनौती के चले और उन्हें हिसाब देने के लिए न कहा जाए तो यह बहुत भयानक बात होगी।[23]

रेअ समर्स ने प्रकाशितवाक्य 19:1-6 के सम्बन्ध में निष्कर्ष निकाला है, "यह रोम पर पड़ने वाली बुराई के लिए आनन्द का उतना गीत नहीं है, जितना यह धार्मिकता और सच्चाई की जीत पर आनन्द का गीत है।"[24] इस विचार को अपने मन में रेखांकित कर लें: ये आयतें घृणा का गीत नहीं बल्कि स्तुति की कविता हैं।

यही महिमा आयत 4 में जारी रहती है: "और चौबीसों प्राचीनों और चारों प्राणियों ने गिरकर परमेश्वर को दण्डवत किया; जो सिंहासन पर बैठा था, और कहा, आमीन, हैलेलुय्याह!"

अध्याय 4 के सिंहासन वाले दृश्य में हम पहले चौबीस प्राचीनों और चार जीवित प्राणियों को मिले थे।[25] हमने सुझाव दिया था कि चौबीस प्राचीन विजयी होने वाले मसीहियों को दिखाते हैं। चार जीवित प्राणी सारी सृष्टि का संकेत होने के कारण स्वर्गदूतों का विशेष क्रम हो सकता है या यूं कहें कि वे परमेश्वर के स्वभाव के स्वर्गीय स्मरण दिलाने वाले हो सकते हैं। दोनों समूहों की सबसे प्रमुख विशेषता यह थी कि वे स्वर्ग की स्थानीय

आराधना सोसायटी थे (5:8, 14; 7:11)। इसमें प्रकाशितवाक्य में अन्तिम बार दिखाई देने पर वे एक बार फिर प्रभु के आगे झुक गए। उन्होंने ''हैलेलुय्याह'' पुकारने के स्वर्गीय कोरस में ''आमीन'' शब्द जोड़ दिया।[26] उन्होंने परमेश्वर की उस सब के लिए जो उसने किया था, महिमा की।

परमेश्वर की उसके लिए महिमा करना जो वह है (19:5, 6)

परमेश्वर ने जो कुछ *किया* था, उसमें परमेश्वर के *स्वभाव* के लिए उसकी महिमा भी थी: आयत 1 में यह संकेत था कि वह हमारा महिमा से भरा और शक्तिशाली उद्धारकर्त्ता है। आयत 2 में संकेत था कि वह न्यायप्रिय, सच्चा और धार्मिक है। परन्तु आयत 5 के आरम्भ से गीत में परमेश्वर की महिमा का *फोकस* उस पर है, जो वह है।

''और सिंहासन में से एक शब्द निकला'' (आयत 5क)। यह सम्भतया उन चार प्राणियों में से एक की आवाज़ थी जो ''सिंहासन के बीच में और सिंहासन के चारों ओर'' थे (4:6)।[27] उस शब्द में यह कहा गया, ''हे हमारे परमेश्वर से सब डरने वाले दासो, क्या छोटे, क्या बड़े; तुम सब उसकी स्तुति करो''[28] (आयत 5ख)। ''दासो'' ''मसीही लोगो'' कहने का एक और ढंग है (देखें 1:1); इसमें हमारे प्रभु का कर्जदार होने पर ज़ोर है। ''डरने वालो'' में इस बात पर ज़ोर है कि इन लोगों ने भक्ति और भय से अपने जीवन प्रभु को सौंप दिए थे (सभोपदेशक 12:13)। ''क्या छोटे क्या बड़े'' इस विचार को रेखांकित करता है कि *हर* मसीही उसकी महिमा करेगा; ''जाति, वर्ग और संस्कृति में अन्तर सब अतीत की बात है।''[29]

आवाज़ के जवाब में यूहन्ना ने तुरन्त ''बड़ी भीड़ का सा, और बहुत जल का सा शब्द'' (आयत 6क)। प्रकाशितवाक्य में पहले अगले गीत की सामर्थ और भव्यता पर ज़ोर देते हुए ऐसे ही शब्दों का इस्तेमाल किया गया है (1:15; 14:2)।

भीड़ गा रही थी ''हैलेलुय्याह, इसलिए कि प्रभु हमारा परमेश्वर, सर्वशक्तिमान राज्य करता है'' (आयत 6ख)। गीत का यह भाग छोटा परन्तु सामर्थ से भरा है, जिसमें ''प्रभु'' शब्द का अर्थ ''मालिक'' या ''हाकिम'' है। ''सर्वशक्तिमान'' प्रकाशितवाक्य में विशेष रूप से परमेश्वर को कहा गया है।[30] अक्षरश: इस शब्द का अर्थ है ''जिसके नियन्त्रण में सब चीज़ें हैं।''[31] ''राज करता है'' शब्द भी महत्वपूर्ण है। एक सांसारिक दृष्टिकोण से ऐसा लगा जैसे नियन्त्रण सम्राट का है, परन्तु यह केवल भ्रम था। राज परमेश्वर ही कर रहा था।

मूल धर्मशास्त्र में, अनुवादित शब्द ''राज करता है'' भूतकाल में है, जिसका मूल अनुवाद होगा, ''प्रभु हमारे परमेश्वर, सर्वशक्तिमान ने *राज किया*।'' भीड़ आज की विजय का जश्न मना रही थी, जिस कारण अधिकतर अनुवादों में इस शब्द को वर्तमानकाल में रखा गया है (''राज करता है''); परन्तु इन अनुवादों से यह निष्कर्ष नहीं निकलता कि परमेश्वर ने रोम पर अपनी विजय से पूर्व राज नहीं किया।[32] परमेश्वर ने सर्वदा राज किया है। मूसा ने गाया, ''यहोवा सदा सर्वदा राज्य करता रहेगा'' (निर्गमन 15:18)। दाऊद ने

कहा कि ''यहोवा सर्वदा के लिए राजा होकर विराजमान रहता है'' (भजनसंहिता 29:10)। दानिय्येल ने राजा को बताया कि ''मनुष्यों के राज्य में परमप्रधान ही प्रभुता करता है'' (दानिय्येल 4:25)। आयत 6ख का संदेश है कि परमेश्वर ने राज *किया था,* राज कर रहा *था* और *सर्वदा* राज करता रहेगा।

इस सच्चाई से पहली शताब्दी के मसीहियों को आशा मिल गई। परीक्षाओं के बीच में वे बेहतर कल में विश्वास कर सकते थे:

> काले आसमान पर पहले ही भोर की गुलाबी उंगलियों से लकीर बन गई थी। जंगल में [वे] भारी वर्षा की आवाज़ सुन सकते थे। चश्मे की मधुर आवाज़ से पहले ही सर्द हवा आ रही थी। [वे] उम्मीद के पंजों पर खड़े थे। ...[33]

उन्होंने अपनी आशा किस आधार पर रखी थी? ''किसी देश की जीत'' पर नहीं या ''किसी राजनैतिक या आर्थिक योजना की सफलता'' पर नहीं, बल्कि उनकी आशा का आधार ''परमेश्वर के सम्पूर्ण राजा होने'' पर था।[34]

पहली शताब्दी में मसीही लोगों को याद दिलाना आवश्यक था कि परमेश्वर राज करता है। आज हमें भी यही याद दिलाने की आवश्यकता है। चाहे जो भी हो जाए मसीही लोग हमेशा पुकार सकते हैं कि ''परमेश्वर राज करता है!''

कई बार लोग चकित होते हैं कि ''यदि परमेश्वर राज करता है तो संसार में इतनी समस्याएं क्यों हैं?''[35] क्लोविस चैप्पल ने अवलोकन किया कि ''प्रभु मानवीय स्वतन्त्रता से मेल खाने के ढंग से राज करता है'':[36] (1) वह इस तरह राज करता है कि जब हमें पाप करने की छूट होती है, तो हमें अपने पाप से भागने की छूट नहीं होती। (2) वह इस तरह राज करता है कि चाहे वह हमें बुराई करने से नहीं रोकता परन्तु वह इससे हारता कभी नहीं। (3) वह इस तरह राज करता है कि जो लोग उससे प्रेम रखते और उसकी आज्ञा मानते हैं हर भलाई उनके लिए और भलाई बन जाती है और हर हानि लाभ में बदल जाती है। (4) वह इस तरह राज करता है कि अन्त में ''हर एक अपराध और आज्ञा न मानने का ठीक-ठीक बदला [मिलेगा]'' (इब्रानियों 2:2)।

1865 में जब अमेरिकी राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन की हत्या हुई थी तो कइयों ने कहा था ''लिंकन मर गया, और आशा भी जाती रही!'' सुसमाचार के एक प्रचारक और गृह युद्ध के दौरान जेम्स ए. गारफील्ड[37] उस समय न्यू यार्क नगर में था। सेंट्रल पार्क में शोक करने वालों के एक समूह के सामने खड़े होकर उसने अमेरिका को हुई हानि माना परन्तु फिर कहा, ''याद रखो कि प्रभु परमेश्वर सर्वशक्तिमान आज भी राज करता है!''[38] दिन अच्छे हों या बहुत अच्छे न हों हमें इस सच्चाई को कभी नहीं भूलना चाहिए!

> हैलेलुय्याह! हैलेलुय्याह! ...
> क्योंकि प्रभु परमेश्वर सर्वशक्तिमान राज करता है।
> .....।

वह सर्वदा, सर्वदा और सर्वदा राज करेगा,
राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु!
राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु!
और वह सर्वदा, सर्वदा, सर्वदा, सर्वदा
सर्वदा और सर्वदा राज करेगा।
हैलेलुय्याह![39]

आइए हम परमेश्वर की महिमा उस सबके लिए जो वह है करते रहें।

सारांश

23 मार्च, 1743 को लंदन में पहली बार हेंडेल के *मसायाह* की प्रस्तुति के समय इंग्लैंड का राजा वही था। सुनने वाले इतने मस्त हो गए थे कि ''For the Lord God omnipotent reigneth'' कोरस गाने पर राजा सहित सब लोग अपने पैर थपथपाने लगे थे। इस प्रकार जब भी और जहां भी गाया जाता *मसायाह* की प्रस्तुति होती ''हैलेलुय्याह कोरस'' गाने के समय खड़े होने की परम्परा बन गई।[40]

प्रकाशितवाक्य के ''हैलेलुय्याह!'' कोरस पढ़े जाने के समय आप शारीरिक रूप से खड़े होते हैं या नहीं इसका कोई महत्व नहीं। परन्तु महत्व इस बात का है कि *आत्मिक रूप में* आप भय और भक्ति से यह गीत गाएं। आत्मा घोषणा करता है कि सर्वशक्तिमान स्वर्ग और पृथ्वी में राज करता है, परन्तु इससे भी एक ज्वलंत प्रश्न रह जाता है कि क्या वह आपके मन और आपके जीवन में राजा बनकर राज करता है?[41]

सिखाने वालों तथा प्रचारकों के लिए नोट्स

इस पाठ के सम्बन्ध में, आपको भजनों की अधिकतर पुस्तकों में ''हैलेलुय्याह'' के कुछ अच्छे गीत गाने चाहिए।

इस पाठ का इस्तेमाल कुछ और जोड़ने के साथ अकेले खड़े होने के प्रवचन के रूप में किया जा सकता है: पहले मुख्य प्वाइंट में, उस सब के लिए जो परमेश्वर ने किया है उसकी महिमा की जा सकने वाली बातों पर चर्चा से आरम्भ करें। फिर ध्यान दें कि इन वचनों में उसके *न्याय* के लिए उसकी महिमा की गई है और यह कि उसके लिए हमें उसकी महिमा क्यों करनी चाहिए। दूसरे मुख्य प्वाइंट में पहले परमेश्वर की महिमा योग्य कुछ विशेषताओं पर सामान्य चर्चा करें। फिर वचन पर ध्यान लगाकर बताएं कि उसका सर्वसामर्थी होना और राज करना उसके स्वभाव के अनिवार्य भाग हैं।

टिप्पणियां

[1]जॉर्ज एफ. हेंडेल, जिनका जन्म 1685 में जर्मनी में और मृत्यु 1759 में लंदन में हुई, अपने समय के महानतम कम्पोज़रों (गीत की धुन बनाने वालों) में से थे। उन्हें सबसे अधिक किए जाने वाले ओरेटोरियो (भजन संगीत) में *मसायाह* के लिए जाना जाता है। [2]पॉल ली टैन, *इन्साक्लोपीडिया ऑफ़ 7700 इलस्ट्रेशंस* (रॉकविल्ले, मेरीलैंड: एश्योरेंस पब्लिशर्स, 1979), 326. [3]स्पष्टतया हेंडेल ने 11:15 से भी एक वाक्यांश "और वह युगानुयुग राज करेगा" लिया। [4]KJV में "अलेलुय्या" है जो यूनानी लिप्यंतरण को बोलने का एक और ढंग है। [5]मूल इब्रानी धर्मशास्त्र में कोई व्यंजन नहीं था और इस्राएली लोग इस भय से कि कहीं व्यर्थ में परमेश्वर का नाम न लिया जाए उसके पवित्र नाम का इस्तेमाल नहीं करते थे। हमें पक्का पता नहीं है कि "यहोवा" शब्द को कैसे लिखा जाता या बोला जाता था। "याहवेह" सहित कई और शब्द-जोड़ सुझाए गए हैं। इस अनिश्चितता के कारण अंग्रेज़ी के कई अनुवादों में "यहोवा/याहवेह" के लिए "LORD" (अंग्रेज़ी के बड़े अक्षरों में) किया जाता है। [6]उदारहण के लिए देखें भजन संहिता 106, 111-113, 115-118, 135, 146-150. [7]मृत्यु पर जय पाने वाले मसीही लोगों का प्रतिनिधित्व चौबीस प्राचीन कर रहे हो सकते हैं (वचन में बाद में टिप्पणियां देखें), इसलिए कइयों का मानना है कि यहां बड़ी भीड़ विशेष रूप से स्वर्गदूतों की है। [8]"उद्धार" शब्द का इस्तेमाल यहां व्यापक अर्थ में किया गया हो सकता है। फ्रैंक पैक ने लिखा है, "उद्धार का उल्लेख केवल पिछले पापों से छुटकारे के लिए नहीं बल्कि मसीही लोगों की हर परीक्षा और सताव से मुक्ति और आने वाली उनकी अन्तिम विजय के लिए है" (*रैवलेशन,* पार्ट 2, द लिविंग वर्ड सीरीज़ [आस्टिन, टैक्सस: आर. बी. स्वीट कं., 1965], 40)। जे. डब्ल्यू. रॉबर्ट्स ने इसके अर्थ को और विस्तृत कर दिया: "उद्धार का अर्थ पवित्र लोगों के अनन्त राज्य में छुटकारा ही नहीं (2 तीमुथियुस 4:18) बल्कि परमेश्वर के उद्देश्य का पूरा होना भी है" (*द रैवलेशन टू जॉन [द अपोकलिप्स],* द लिविंग वर्ड कमैंट्री सीरीज़ [आस्टिन, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1974], 157)। [9]पुस्तक में ये गुण पहले परमेश्वर की विशेषताएं बताए गए हैं। (देखें 4:11; 5:12; 7:10, 12; 12:10.) बल देने के लिए मूल यूनानी धर्मशास्त्र में इन तीनों गुणों में से प्रत्येक के पहले निश्चय उपपद ("the") मिलता है। [10]विलियम बार्कले, *द रैवलेशन ऑफ़ जॉन,* अंक 2 , संशो. संस्क., द डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1976), 169.

[11]देखें 15:3; 16:7. [12]बार्कले, 169. [13]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक "प्रकाशितवाक्य, 2" में "जब बाबुल आपको फुसलाने की कोशिश करे" पाठ देखें। [14]"युगानुयुग" धुआं उठने का संकेत इस विचार पर बल देता है कि उसका गिरना स्थायी होना था (देखें 18:21-23)। इस वाक्य रचना की तुलना यशायाह 34:9, 10 से करें; देखें यहूदा 7. [15]ओवन एल. क्राउच, *एक्सपोज़िटरी प्रीचिंग एंड टीचिंग: रैवलेशन* (जौप्लिन, मिजोरी: कॉलेज प्रैस पब्लिशिंग कं., 1985), 344. [16]उदाहरण के लिए *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक "प्रकाशितवाक्य, 2" के पाठ "बीच हवा में पुलपिट" में 14:10,11 पर नोट्स देखें। [17]डब्ल्यू. बी. वेस्ट जूनि. *रैवलेशन थ्रू फर्स्ट-सैंचुरी ग्लासिस,* संपा. बॉब प्रीचर्ड (नैशविल्ले: गॉस्पल एडवोकेट कं., 1997), 119. [18]लियोन मौरिस, *रैवलेशन,* संशो. संस्क., द टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1987), 211. [19]"निर्दोष ठहराना" लातीनी शब्द से लिया गया है जिसका अर्थ "बचाव करना" है। मैं यहां इसका इस्तेमाल "सही ठहराने" के अर्थ में कर रहा हूं। अन्त में मसीही लोगों और मसीह के कार्य को सही दिखाया जाएगा। [20]जॉर्ज एल्डन लैड, *ए कमैंट्री ऑन द रैवलेशन ऑफ़ जॉन* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1972), 238. देखें 50:15, 29; 51:24, 26, 48.

[21]देखें व्यवस्थाविवरण 32:35; रोमियों 12:19; 2 तीमुथियुस 4:14; इब्रानियों 10:30; 1 पतरस 3:9. [22]लैड, 241. [23]अल्बर्ट बाल्डिंगर, *प्रीचिंग फ्राम रैवलेशन: टाइमली मैसेजेस फ़ॉर ट्रबल्ड हार्ट्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1960), 107. [24]रिअ समर्स, *वर्थी इज़ द लैंब* (नैशविल्ले: ब्रॉडमैन प्रैस, 1951), 195. [25]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक "प्रकाशितवाक्य, 1" में पाठ "वस्तुओं को ध्यान में रखना" देखें। [26]"आमीन" मन से दी गई स्वीकृति का संकेत हैं। (*ट्रुथ फॉर टुडे* की पुस्तक "प्रकाशितवाक्य, 1"

के पाठ ''कलीसिया, जिसने कर लिया था, 1'' में ''आमीन'' शब्द पर नोट्स देखें।) [27]आवाज़ ने ''*हमारे* परमेश्वर की स्तुति करो'' कहा, इसलिए लगता है कि यह परमेश्वर की आवाज़ नहीं थी, न यह यीशु की आवाज़ थी, जो आमतौर पर ''*हमारे* परमेश्वर'' नहीं कहता था। (देखें यूहन्ना 20:17.) [28]इस वाक्य रचना की तुलना भजन संहिता 135:1, 20ख से करें। [29]फिलिप्प ई.ह्यूग्स, *द बुक ऑफ़ द रैवलेशन: ए कमैंट्री* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1990), 197. [30]''सर्वशक्तिमान'' शब्द प्रकाशितवाक्य में नौ बार और नये नियम में केवल एक बार मिलता है। इसका अर्थ हेंडेल के कोरस में इस्तेमाल किए गए लातीनी शब्द ''ओम्नीपोटेंट'' वाला ही है।

[31]राबर्ट माउंस, *द बुक ऑफ़ रैवलेशन,* द न्यू इंटरनैशनल कमैंट्री ऑन द न्यू टैस्टामेंट सीरीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1977), 339. [32]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 2'' के पाठ ''अन्तिम तुरही'' में 11:17 पर चर्चा देखें। [33]क्लोविस जी. चैप्पल, *सरमन्स फ्रॉम रैवलेशन* (न्यू यार्क: अबिंग्डन प्रैस, 1943), 192. [34]वही., 193. [35]इस प्रश्न की चर्चा *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' के पाठ ''कब तक, हे प्रभु?'' में मिलती है। विशेषकर टिप्पणी 30 पर विचार करें। [36]वही, 197. इसके बाद का पहला प्वाइंट चैपल, 197-98 से लिया गया है। चौथा प्वाइंट जोड़ा गया है। [37]गारफील्ड बाद में (1881 में) अमेरिका के राष्ट्रपति बन गए। [38]यह कहानी वेस्ट, 128 में मिलती है। [39]जॉर्ज एफ. हेंडेल, ''हैलेलुय्याह कोरस,'' *सौंग्स ऑफ़ फेथ एंड प्रेज़,* संपा. आल्टन एच.हावर्ड (वेस्ट मोनरो, लुईसियाना.: हावर्ड पब्लिशिंग कं., 1996). [40]यह कहानी टैन, 480 से ली गई है।

[41]यदि इस पाठ का इस्तेमाल प्रवचन के रूप में किया जाता है तो आपको चाहिए कि लोगों को परमेश्वर को उस पर भरोसा रखकर और उसकी आज्ञाओं को मानकर ''अपने जीवनों का राजा'' बनाने को प्रोत्साहित करें। मसीही बनने के लिए आवश्यक वचनों में यूहन्ना 3:16; मरकुस 16:16; प्रेरितों 2:38; गलातियों 3:26, 27 हैं। घर वापसी के लिए प्रेरितों 8:22; याकूब 5:16; 1 यूहन्ना 1:9 के साथ इस पुस्तक में पहले आए पाठ ''हे मेरे लोगो, उसमें से निकल आओ'' का सारांश शामिल है।

विचार एवं चर्चा के लिए प्रश्न

1. हेंडेल के ''हैलेलुय्याह कोरस'' के शब्दों की तुलना प्रकाशितवाक्य 19:1-6, 16; 11:15 से करें।
2. ''हैलेलुय्याह'' शब्द का मूल अर्थ क्या है? इस शब्द में परमेश्वर का पवित्र नाम है, इसलिए क्या यह वह शब्द है जिसका इस्तेमाल यूंही या हल्के ढंग से लेना चाहिए?
3. (पाठ के अनुसार) कौन से तीन बातों के लिए परमेश्वर की महिमा की जानी चाहिए? कुछ भजनों में या भजनों की पुस्तक के गीतों में इन दोनों विषयों के उदाहरण ढूंढ़ें।
4. *आपको* क्यों लगता है कि आरम्भिक मसीहियों को रोम के पतन पर आनन्द करने की आज्ञा दी गई थी?
5. यह आवश्यक क्यों है कि बुराई को दण्ड दिया जाए?
6. अध्याय 19 में हमें चौबीस प्राचीन और चार जीवित प्राणी अन्तिम बार मिलते हैं। इन प्रतीकों पर और सिंहासन के दृश्य में जो कुछ वे जोड़ते हैं उस पर विचार करना लाभदायक हो सकता है।
7. आरम्भिक मसीहियों के लिए यह जानना कितना आवश्यक था कि ''परमेश्वर राज

करता है''? हमारे लिए यह जानना कितना आवश्यक है?

8. पाठ में सुझाव है कि परमेश्वर हमारे मनों में राज करता होना चाहिए। परमेश्वर के लिए ''हमारे मनों में राज करने'' का क्या अर्थ है?